INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

SSC - GD

FOR BSF, CISF, ITBP, SSB, CRPF, ETC.

STAFF SELECTION COMMISSION

भाग – 3 (b)

सामान्य हिंदी

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स **"SSC GD (General Duty)"** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **STAFF SELECTION COMMISSION (SSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"SSC GD (General Duty)"** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/jl972n

Online Order करें - http://surl.li/pcohy

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	हिंदी वर्णमाला	1
2.	संधि और संधि विच्छेद	3
3.	प्रत्य एवं उपसर्ग	9
4.	सामासिक पदों की रचना और समास- विग्रह	15
5.	संज्ञा	30
6.	सर्वनाम	35
7.	विशेषण	36
8.	लिंग	38
9.	कारक	40
10.	क्रिया	41
11.	काल	42
12.	वाच्य	44
13.	अव्यय (अविकारी शब्द)	45
14.	पर्यायवाची शब्द	49
15.	विलोम शब्द	59
16.	अनेकार्थक शब्द	67
17.	मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ	69
18.	शब्द - शुद्धि	80
19.	शब्द -युग्म (समरूपी भिन्नार्थक शब्द)	86
20.	अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों के समानार्थक हिंदी शब्द	92
21.	वाक्य रचना एवं वाक्यों के प्रकार तथा पदबंध	107
22.	वाक्य - शुद्धि	111
23.	वाक्यांशों के स्थान पर एक शब्द	117
24.	वचन	123
25.	अलंकार	125

अध्याय – 1

हिंदी वर्णमाला

भाषा के दो रूप होते हैं-

1. **मौखिक या उच्चारित भाषा-** मौखिक भाषा की सूक्ष्मतम इकाई ध्वनि होती है। वास्तव में ध्वनि का संबंध सुनने व बोलने से है। यह भाषा उच्चारण पर आधारित होती है। उच्चारण करने के लिए मानव के जो मुख्य-अवयव काम करते हैं वह उच्चारण अवयव कहलाते हैं।
2. **लिखित भाषा-** लिखित भाषा की सूक्ष्मतम इकाई वर्ण होती है। वर्ण का संबंध लिखने व देखने से है। वर्ण ध्वनि रूपी आत्मा का शरीर है।

लिखित रूप से भाषा की वह छोटी से छोटी इकाई जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते हो वर्ण कहलाते हैं।
जैसे एक शब्द है - नीला।
नीला शब्द के यदि टुकड़े किए जाए तो वे होंगे-
नी + ला
अब यदि नी और ला के भी टुकड़े किए जाए तो वे होंगे-
न् + ई तथा ल् + आ।
अब यदि न ई, ल् आ के भी हम टुकडे करना चाहे तो यह संभव नहीं है। अतः ये वर्ण कहलाते हैं।
ये वर्ण दो ही प्रकार के होते हैं- स्वर तथा व्यंजन
वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं, शब्दों के मेल से वाक्य तथा वाक्यों के मेल से भाषा बनती है। अतः वर्ण ही भाषा का मूल आधार है।
हिंदी में वर्णों की संख्या 44 है।
वर्णों को दो भागों में बांटा जाता है-

1. स्वर **2. व्यंजन**

1. स्वर - स्वतंत्र रूप से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ स्वर कहलाती है, अर्थात् वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण के सहयोग की आवश्यकता नहीं होती स्वर कहलाते हैं।
स्वरों की संख्या 11 - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ
मात्राओं की संख्या 10 - क्योंकि 'अ' की कोई मात्रा नहीं होती।

2. व्यंजन - वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण के सहयोग की आवश्यकता होती है, अर्थात् स्वरों के सहयोग से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ व्यंजन कहलाती है।
व्यंजनों की संख्या 33 होती है।

विशेष

1. हिंदी निदेशालय 1966 के अनुसार कुल वर्णों की संख्या 52 मानी गई है।
2. हिंदी की मानक लिपि 'देवनागरी' के अनुसार कुल वर्णों की संख्या 52 मानी गई है।

स्वरों का वर्गीकरण पाँच भागों में बांटा जाता है।

1. उच्चारण अवधि के आधार पर-

1. **लघु स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में कम समय लगता है, अर्थात् एक मात्रा का समय लगता है, लघु स्वर कहलाते हैं।
   जैसे- अ, इ, उ, ऋ
   इन्हें मूल स्वर और ह्रस्व स्वर भी कहते हैं।
2. **दीर्घ स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में लघु स्वरों की तुलना में दोगुना समय लगता है अर्थात् दो मात्रा का समय लगता है, दीर्घ स्वर कहलाते हैं।
   जैसे- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
   इन्हें सन्धि स्वर भी कहते हैं।

2. ओष्ठाकृति के आधार पर -

1. **वृत्ताकार स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में होठों की आकृति वृत्त के समान गोल हो जाती है, वृत्ताकार स्वर कहलाते हैं।
   जैसे- उ, ऊ, ओ, औ
2. **अवृत्ताकार स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में होठों की आकृति वृत के समान गोल न होकर फैले रहते हैं। अवृत्ताकार स्वर कहलाते हैं।
   जैसे- अ, आ, इ, ई, ऋ, ए, ऐ

3. जिह्वा की क्रियाशीलता के आधार पर:-

1. **अग्र स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का अगला भाग क्रियाशीलता रहता है, अग्र स्वर कहलाते हैं।
   जैसे- इ, ई, ऋ, ए, ऐ
2. **मध्य स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का मध्य भाग क्रियाशील रहता है, मध्य स्वर कहलाते हैं ।
   जैसे- 'अ'
3. **पश्च स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का पिछला (पश्च) भाग क्रियाशील रहता है, पश्च स्वर कहलाते हैं ।
   जैसे- आ, उ, ऊ, ओ, औ

4. मुखाकृति के आधार पर -

1. **संवृत स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख वृत्त के समान बंद-सा रहता है, अर्थात् सबसे कम खुलता है, संवृत स्वर कहलाते हैं।
   जैसे- इ, ई, उ, ऊ, ऋ
2. **अर्द्ध संवृत स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख संवृत स्वरों की तुलना में आधा बंद-सा रहता है, अर्द्ध संवृत स्वर कहलाते हैं।
   जैसे- ए, औ
3. **विवृत्त स्वर-** विवृत का अर्थ होता है 'खुला हुआ', वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख्य पूरा खुला रहता है अर्थात् सबसे ज्यादा खुला रहता है विवृत स्वर कहलाते हैं ।
   जैसे- 'आ'

4. **अर्द्ध विवृत्त -** वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख विवृत स्वरों की तुलना में आधा और अर्द्ध-संवृत स्वरों की तुलना में ज्यादा खुला-सा रहता है, अर्द्ध विवृत स्वर कहलाते हैं।
जैसे- अ, ऐ, औ

5. नासिका के आधार पर-

1. **निरनुनासिका स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में नासिका का प्रयोग नहीं किया जाता अर्थात् सिर्फ मुख से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ, निरनुनासिक कहलाती है।
जैसे- सभी स्वर

2. **अनुनासिक स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में नासिक का प्रयोग किया जाता है, अर्थात् मुख के साथ-साथ नासिक से भी उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ अनुनासिक। सानुनासिक कहलाती हैं।
जैसे- अँ, आँ, इँ, ईं, उँ, ऊँ, ॠँ, एँ, ऐं, ओं, औं

व्यंजनों का वर्गीकरण

1. उच्चारण प्रयत्न के आधार पर-

ध्वनियों के उच्चारण में होने वाले यत्न को 'प्रयत्न' कहा जाता है। यह प्रयत्न तीन प्रकार से होते हैं-

1. **स्वरतंत्री में कंपन्न-** स्वरतंत्रियो में होने वाली कंपन्न, नांद या गूंज के आधार पर व्यंजनों के दो भेद किए जाते हैं - सघोष और अघोष

अघोष वर्ण- जिन ध्वनियों के उच्चारण में भारीपन नहीं रहता है वे अघोष ध्वनियाँ कहलाती है।
वर्गीय व्यंजनों के पहले व दूसरे व्यंजन अघोष होते हैं। (क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ तथा ष, श, स)।

सघोष वर्ण- जिन ध्वनियों के उच्चारण में भारीपन रहता है वे सघोष ध्वनियां कहलाती हैं।
वर्गीय व्यंजनों का तीसरा, चौथा और पाँचवां व्यंजन 'सघोष होता है।
(ग, घ, ड़, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म) अन्तः स्थ (य, र, ल, व) तथा ह । सभी स्वर भी घोष वर्ण होते हैं।

2. **श्वास वायु की मात्रा-** उच्चारण में वायु प्रक्षेप या श्वास वायु की मात्रा की दृष्टि से व्यंजनों के दो भेद हैं-

1.अल्पप्राण **2. महाप्राण**

1. **अल्पप्राण-** जिनके उच्चारण में श्वास मुख से अल्प मात्रा में निकले और जिनमें 'हकार' जैसी ध्वनि नहीं होती, उन्हें अल्पप्राण ध्वनियाँ कहलाती हैं। प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवा वर्ण अल्पप्राण व्यंजन है।
जैसे- क, ग, ड़, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म।
अन्तस्थ (य, र, ल, व) तथा सभी स्वर भी अल्पप्राण ही हैं।

2. **महाप्राण-** महाप्राण व्यंजनों के उच्चारण में 'हकार' जैसी ध्वनि विशेष रूप से रहती है और श्वास अधिक मात्रा में निकलती है। प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण तथा समस्त ऊष्म वर्ण महाप्राण होते हैं।
जैसे- ख, घ, छ, झ, ठ, ढ़, थ, ध, फ, भ और ष, श, स, ह।

3. मुख अवयवों द्वारा श्वास को रोकने के रूप में-

ध्वनियों का उच्चारण करते समय हमारी जीव या अन्य मुख्य अवयव अनेक प्रकार से प्रयत्न करते हैं इस आधार पर व्यंजनों को निम्नलिखित विभाजन किया जाता है।

स्पर्शी व्यंजन- ये कंठ, तालु, मूर्धा, दंत और ओष्ठ स्थानों के स्पर्श से बोले जाते हैं इसलिए इन्हें स्पर्शी व्यंजन कहते हैं।

उदाहरणार्थ-
क वर्ग -क, ख, ग, घ, ड़ (कंठ से)
च वर्ग -च, छ, ज, झ, ञ (तालु से)
ट वर्ग - ट, ठ, ड, ढ, ण (मूर्धा से)
त वर्ग - त, थ, द, ध, न (दन्त से)
प वर्ग - प, फ, ब, भ, म (ओष्ठ से)

नासिक्य- जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय मुख-अवयव वायु को रोकते हैं परंतु वायु पूरी तरह मुख से न निकल कर नाक से भी निकलती है उन्हें नासिक्य व्यंजन कहते हैं। ड़, ञ, ण, न, म नासिक के व्यंजन है

स्पर्श संघर्षी - जिन व्यंजन के उच्चारण में वायु पहले किसी मुख-अवयव से स्पर्श करती है, फिर रगड़ खाते हुए बाहर निकलती है उन्हें स्पर्शी संघर्षी व्यंजन कहते हैं।
च, छ, ज, झ स्पर्ष संघर्शी व्यंजन है।

संघर्षी - जिन व्यंजनों का उच्चारण एक प्रकार की रगड़ या घर्षण से उत्पन्न ऊष्मा वायु से होता है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। यह चार है - ष, श, स, ह । इन्हें ही संघर्षी व्यंजन भी कहते हैं।

उत्क्षिप्त- उत्क्षिप्त शब्द का अर्थ है उछाला हुआ या फेंका हुआ। जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ का अग्रभाग मूर्धा को स्पर्श करके झटके से वापस आता है उन्हें उत्क्षिप्त व्यंजन कहते हैं। ड़, ढ़ उत्क्षिप्त व्यंजन हैं।

अतःस्थ - स्वरों और व्यंजनों के मध्य स्थित होने के कारण य, र, ल, व को अंतस्थ व्यंजन कहा जाता है। अंतस्थ व्यंजनों का विभाजन निम्न है-

पार्श्विक - पार्श्विक का अर्थ है-बगल का। जिस ध्वनि के उच्चारण में जिह्वा श्वास वायु के मार्ग में खड़ी हो जाती है और वायु उसके अगल-बगल से निकल जाती है, उसे पार्श्विक व्यंजन कहते हैं। 'ल' पार्श्विक व्यंजन है।

प्रकंपित - प्रकंपित का अर्थ है कांपता हुआ। जिस व्यंजन के उच्चारण में जिह्वा की नोक वायु से रगड़ खाकर कांपती रहती है उसे प्रकंपित व्यंजन कहते हैं। 'र' प्रकंपित व्यंजन है।

लुण्ठित - 'र' को लुण्ठित व्यंजन कहते हैं क्योंकि 'र' के उच्चारण में जिह्वा लुढ़ककर स्पर्ष करती है।

अर्द्ध स्वर - हिंदी में य, व ऐसी ध्वनियाँ है जो न तो पूर्ण रूप से स्वर है, ना पूर्णरूपेण व्यंजन है। इनके उच्चारण में श्वास वायु को रोकने के लिए उच्चारण अवयव प्रयत्न तो करते हैं, लेकिन वह प्रयत्न न के बराबर होता है। अतः यह ध्वनियाँ लगभग अवरोध रहित निकल जाती हैं।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 4

सामासिक पदों की रचना और समास - विग्रह

⇒ **समास का शाब्दिक अर्थ** - जोड़ना या मिलाना। अर्थात् समास प्रक्रिया में दो या दो से अधिक शब्दों को आपस में मिलाकर एक शब्द बनाया जाता है!

⇒ दो अथवा दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए नए सार्थक शब्द को समास कहते है।

⇒ **समस्त पद (सामासिक पद)**-समास के नियमों का पालन करते हुए जो शब्द बनता है उसे समास पद या सामासिक,पद कहते हैं।

⇒ समस्त पद के सभी पदों को अलग अलग किए जाने की प्रक्रिया को समास विग्रह कहलाती है।

⇒ समास वह शब्द रचना है जिसमें अर्थ की दृष्टि से परस्पर स्वतंत्र सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य स्वतंत्र शब्द की रचना करते है।

सामासिक शब्द में आए दो पदों में पहले पद को पूर्वपद तथा दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं। ।

जैसे:-

गंगाजल	गंगाजल -	गंगा का जल
गंगा	जल	गंगा जल
(पूर्वपद)	(उत्तरपद)	(समस्त पद) (समास विग्रह)

कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को प्रस्तुत कर देना ही समास का प्रमुख उद्देश्य होता है।

समास 6 प्रकार के होते हैं

समास के प्रकार Types Of Compound

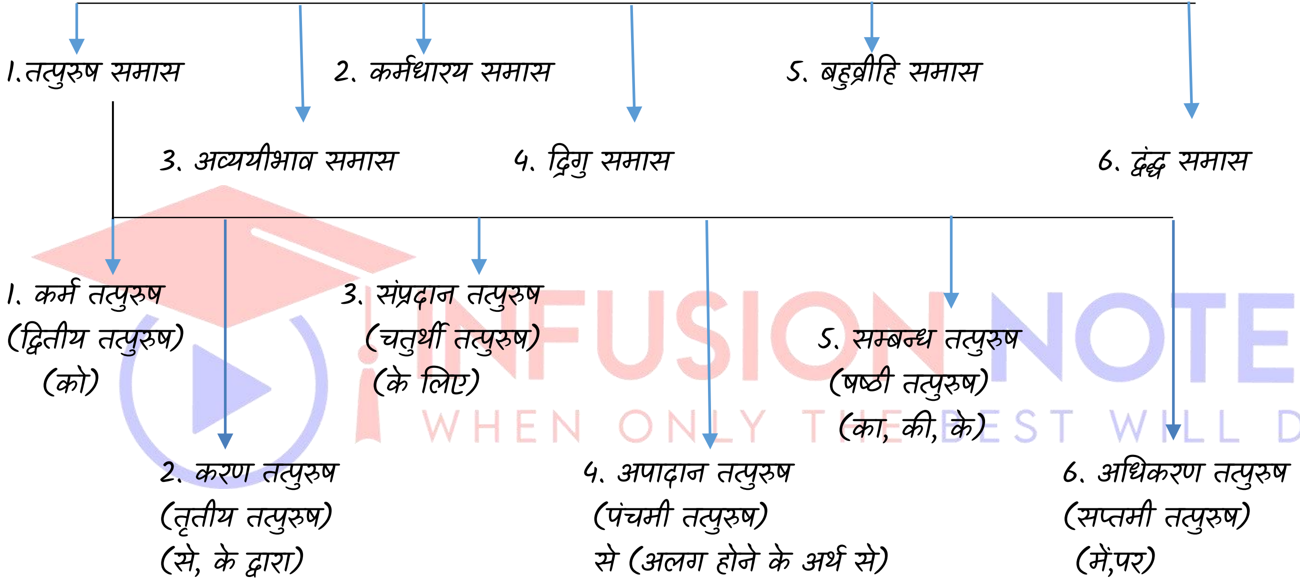
1.तत्पुरुष समास
2. कर्मधारय समास
5. बहुव्रीहि समास
3. अव्ययीभाव समास
4. द्विगु समास
6. द्वंद्व समास
1. कर्म तत्पुरुष
(द्वितीय तत्पुरुष)
(को)
3. संप्रदान तत्पुरुष
(चतुर्थी तत्पुरुष)
(के लिए)
5. सम्बन्ध तत्पुरुष
(षष्ठी तत्पुरुष)
(का, की, के)
2. करण तत्पुरुष
(तृतीय तत्पुरुष)
(से, के द्वारा)
4. अपादान तत्पुरुष
(पंचमी तत्पुरुष)
से (अलग होने के अर्थ से)
6. अधिकरण तत्पुरुष
(सप्तमी तत्पुरुष)
(में,पर)

पद की प्रधानता के आधार पर समास का वर्गीकरण

(क) पूर्वपद प्रधान –अव्ययीभाव

(ख) उत्तर पद प्रधान - तत्पुरुष, कर्मधारय और द्विगु

(ग) दोनों पद प्रधान-द्वन्द्व

(घ) दोनों पद अप्रधान - बहुव्रीहि (इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता हैं)

नोट:

भारतीय भाषा में कुछ ऐसे शब्द हैं जिनके रुप में लिंग, वचन के अनुसार परिवर्तन या विकार उत्पन्न नहीं होता है, उन्हें अव्यय शब्द या अविकारी शब्द कहते हैं।

अर्थात् ऐसे शब्द जिनका व्यय ना हो, उन्हे अव्यय शब्द कहते हैं।

जैसे –यथा, तथा, यदा, कदा, आ, प्रति, जब, तब, भर, यावत, हर आदि।

(1) अव्ययीभाव समास Adverbial Compound

जिस समास में पहला पद अर्थात् पूर्वपद प्रधान तथा अव्यय होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते है।

पहचान- सामासिक पद (समस्त पद) मे यथा, आ, अनु, प्रति, भर, तथा, यदा, कदा, जब, तब, यावत, हर आदि शब्द आते हैं।

समस्त पद		विग्रह
आजन्म	-	जन्म से लेकर
आमरण	-	मरने तक
आसेतु	-	सेतु तक
आजीवन	-	जीवन भर
अनपढ़	-	बिना पढ़ा
आसमुद्र	-	समुद्र तक
अनुरुप	-	रुपके योग्य

अपादमस्तक	-	पाद से मस्तक तक
यथासंभव	-	जैसा सम्भव हो/जितना सम्भव हो सके
यथोचित	-	उचित रुप मे/जो उचित हो
यथा विधि	-	विधि के अनुसार
यथामति	-	मति के अनुसार
यथाशक्ति	-	शक्ति के अनुसार
यथानियम	-	नियम के अनुसार
यथाशीघ्र	-	जितना शीघ्र हो
यथासमय	-	समय के अनुसार
यथासामर्थ	-	सामर्थ के अनुसार
यथाक्रम	-	क्रम के अनुसार
प्रतिकूल	-	इच्छा के विरुद्ध
प्रतिमाह	-	प्रत्येक -माह
प्रति दिन	-	प्रत्येक - दिन
भरपेट	-	पेट भर के
हाथों हाथ	-	हाथ ही हाथ में/ (एक हाथ से दूसरे हाथ)
परम्परागत	-	परम्परा के अनुसार
थल - थल	-	प्रत्येक स्थान पर
बोटी - बोटी	-	प्रत्येक बोटी
नभ -नभ	-	पूरे नभ में
रंग - रंग	-	प्रत्येक रंग के
मीठा - मीठा	-	बहुत मीठा
चुप्प -चुप्प	-	बिल्कुल चुपचाप
आगे- आगे	-	बिल्कुल आगे
गली - गली	-	प्रत्येक गली
दूर - दूर	-	बिल्कुल दूर
सुबह - सुबह	-	बिल्कुल सुबह
एकाएक	-	एक के बाद एक
दिनभर	-	पूरे दिन
दो - दो	-	दोनों दो | प्रत्येक दोनों
रोम- रोम	-	पूरे रोम मे
नए - नए	-	बिल्कुल नए
हरे - हरे	-	बिल्कुल हरे
बारी - बारी	-	एक एक करके / प्रत्येक करके
बे - मारे	-	बिना मारे
जगह - जगह	-	प्रत्येक जगह

मील - भर	-	पूरे मील
गरमागरम	-	बहुत गरम
पतली-पतली	-	बहुत पतली
हफ्ता भर	-	पूरे हफ्ते
प्रति एक	-	प्रत्येक
एक - एक	-	हर एक / प्रत्येक
धीरे - धीरे	-	बहुत धीरे
अलग-अलग	-	बिल्कुल अलग
मनचाहे	-	मन के अनुसार
छोटे - छोटे	-	बहुत छोटे
भरे - पूरे	-	पूरा भरा हुआ
जानलेवा	-	जान लेने वाली
दूरबीन	-	दूर देखने वाली
सहपाठी	-	साथ पढ़ने वाला/वाली
खुला - खुला	-	बहुत खुला
कोना-कोना	-	सारा कोना
मात्र	-	केवल एक
भरा-भरा	-	बहुत भरा
शुरु - शुरु	-	बहुत आरंभ/शुरु में
अंग- अंग	-	प्रत्येक अंग
अहेतुक	-	बिना किसी कारण के
प्रतिवर्ष	-	वर्ष - वर्ष /हर वर्ष
छातीभर	-	छाती तक
बार-बार	-	बहुत बार
देखते - देखते	-	देखते ही देखते
एकदम	-	अचानक से
रात-रात	-	पूरी रात भर
सालों-साल	-	बहुत साल
रातों-रात	-	बहुत रात
ड़रा - ड़रा	-	बहुत ड़रा
तरह- तरह	-	बहुत तरह के
भरपूर	-	पूरा भर के
सालभर	-	पूरे साल
घर-घर	-	प्रत्येक घर
नए-नए	-	बिल्कुल नए
घूमता- घूमता	-	बहुत घूमता
बेशक	-	बिना शक के

[v] संबंध तत्पुरुष समास (षष्ठी तत्पुरुष) :- जिस तत्पुरुष समास मे संबंध कारक की विभक्ति 'का', 'की', 'के' लुप्त हो जाती है, वहाँ संबंध तत्पुरुष समास होता है|

जैसे :-

समस्त पद		**विग्रह**
राजपुत्र	-	राजा का पुत्र
राजाज्ञ	-	राजा की आज्ञा
पराधीन	-	पर के अधीन
राजकुमार	-	राजा का कुमार
देवरक्षा	-	देव की रक्षा
शिवालय	-	शिव का आलय (आलय- घर)
गृहस्वामी	-	गृह का स्वामी
विद्यासागर	-	विद्या का सागर
लोकतंत्र	-	लोगों का तंत्र
ईश्वरभक्त	-	ईश्वर का भक्त
राजदूत	-	राजा का दूत
राजसभा	-	राजा की सभा
लखपति	-	लाखों (रुपयों) का पति
जलधारा	-	जल की धारा
क्षमादान	-	क्षमा का दान
मताधिकार	-	मत का अधिकार
भारत रत्न	-	भारत का रत्न
मृत्युदंड़	-	मृत्यु का दंड़
स्वतन्त्र	-	स्व का तन्त्र
देव मूर्ति	-	देव की मूर्ति
गंगा – तट	-	गंगा का तट
अमृतधारा	-	अमृत की धारा
गणपति	-	गण का पति (गणेश)
राजकन्या	-	राजा की कन्या
गंगाजल	-	गंगा का जल
राजपुरुष	-	राजा का पुरुष
घुड़दौड़	-	घोड़ों की दौड़
राजरानी	-	राजा की रानी
पर्णशाला	-	पर्ण की शाला
राष्ट्रपति	-	राष्ट्र का पति
लोकसभा	-	लोगों की सभा
सेनाध्यक्ष	-	सेना का अध्यक्ष
देशप्रेम	-	देश का प्रेम
मातृशक्ति	-	माता की शक्ति
आत्मसम्मान	-	आत्मा का सम्मान
जलापूर्ति	-	जल की आपूर्ति
स्वलेख	-	स्व का लेख
आत्मरक्षा	-	आत्मा की रक्षा
प्रजापति	-	प्रजा का पति
सेनापति	-	सेना का पति
श्रमदान	-	श्रम का दान
देशसेवक	-	देश का सेवक
उद्योगपति	-	उद्योग का पति
पशुपति	-	पशुओं का पति
राजनीति	-	राजा की नीति
देशोद्धार	-	देश का उद्धार
आनंद श्रम	-	आनन्द काआश्रम
गुरुसेवा	-	गुरु की सेवा
ग्रामोद्धार	-	ग्राम का उद्धार
चंद्रोदय	-	चंद्र का उदय
दया सागर	-	दया का सागर
पुस्तकालय	-	पुस्तक का आलय (आलय- घर)
विद्यालय	-	विद्या का आलय (आलय = घर)
रामायण	-	राम का अयन
मोरपंख	-	मोर का पंख
दावानल	-	जंगल की आग
ब्रिटिशराज	-	ब्रिटिश का राज
लौह श्रंखला	-	लोहे की श्रंखला
रणभेरी	-	रण की भेरी
हिमपात	-	हिम का पात अर्थात् (बर्फ) का गिरना
ब्याहमंड़प	-	ब्याह के मंड़प
वनस्थली	-	वन का स्थल
प्रेम कहानी	-	प्रेम की कहानी
भारतवासियों	-	भारत के वासियों
संध्या समय	-	संध्या के समय
विचार विनिमय	-	विचारों का विनिमय
प्रेमलिंगन	-	प्रेम का आलिंगन

अभिनंदनपत्र	-	अभिनंदन का पत्र
जोर अजमाई	-	जोर (ताकत) की अजमाई
दोपहर	-	दो पहरों का समाहर
समुद्रतल	-	समुद्र का तल
हिमालय	-	हिम (बर्फ) का आलय (आलय = घर)
जीवनशैली	-	जीवन की शैली
जीवनदर्शन	-	जीवन का दर्शन
सौंदर्यप्रसाधनों	-	सौंदर्य के प्रसाधनों
प्रतिष्ठा चिन्ह	-	प्रतिष्ठा के चिन्ह
मनचाहा	-	मन के अनुसार
लक्ष्य श्रम	-	लक्ष्य का श्रम
उपभोक्तावाद दर्शन	-	उपभोक्तावाद का दर्शन
व्यक्तिकेंद्रता	-	व्यक्ति की केंद्रता
वनपक्षी	-	वन का पक्षी
घटनाक्रम	-	घटनाओं का क्रम
जीवनसाथी	-	जीवन का साथी
हत्याकांड	-	हत्या का कांड
राजमंदिर	-	राजा का मंदिर
भारत सरकार	-	भारत की सरकार
वृद्धावस्था	-	वृद्धा की अवस्था
प्रेमाआलय	-	प्रेम का आलय
प्रेमसंबंध	-	प्रेम का संबंध
मंत्री मंडल	-	मंत्रियों का मंडल
स्मृतिचिन्ह	-	स्मृति का चिन्ह
कनपटी	-	कान की पटी
कथाकार	-	कथा का जानकार
युगप्रवर्तक	-	युग का प्रवर्तक
दुर्गापूजा	-	दुर्गा की पूजा
कुलदेवी	-	कुल की देवी
कृपानिधान	-	कृपा के निधान
ब्रजभाषा	-	ब्रज की भाषा
कवि सम्मेलन	-	कवियों का सम्मेलन
उपन्यास सम्राट	-	उपन्यास का सम्राट
रत्नाकार	-	रत्नों का आकार
चिताभस्म	-	चिता की भस्म

आश्रमवासियों	-	आश्रम के वासियों
मानवसत्य	-	मानव का सत्य
प्राणीलोक	-	प्राणियों का लोक
करुणा भाव	-	करुणा का भाव
मैना दंपत्ति	-	मैना की दंपत्ति
शिरीषवृक्ष	-	शिरीष का वृक्ष
कथादशक	-	कथा का दशक
प्राणपण	-	जान की बाजी
कलाकार	-	कला का जानकार
विनाशलीलाओं	-	विनाश की लीलाओं
राजभवन	-	राजा का भवन
मुख्यमंत्री निवास	-	मुख्यमंत्री का निवास
गृह स्वामिनी	-	ग्रह की स्वामिनी
पुलिस चौकी	-	पुलिस की चौकी
स्वतंत्रता सैनानी	-	स्वतंत्रता के सैनानी
परिकथा	-	परियों की कथा
कन्यादान	-	कन्या का दान
धर्मसंकट	-	धर्म का संकट
अर्थशास्त्र	-	अर्थ का शास्त्र
मर्दजात	-	मर्द की जात
साहित्यचर्चा	-	साहित्य की चर्चा
स्त्री सुबोधिनी	-	स्त्री की सुबोधिनी
जन्मपत्र	-	जन्म का पत्र
माटीखाना	-	मिट्टी की खान
प्रमाणपत्र	-	प्रमाण पत्र का
पत्नीवियोग	-	पत्नी का वियोग
आज्ञानुसार	-	आज्ञा के अनुसार
कायदानुसार	-	कायदे के अनुसार
मंत्रिपरिषद	-	मंत्रियों का परिषद
प्रेमसागर	-	प्रेम का सागर
राजमाता	-	राजा की माता
आमचूर	-	आम का चूर्ण
रामचरित	-	राम का चरित

(5) द्वन्द्व (द्वन्द) समास (Copulative Compound):-

जिस समास में दोनों पद प्रधान हो तथा विग्रह करने पर 'और',अथवा , 'या', 'एवं' लगता हो, वहाँ द्वन्द्व समास होते हैं।

पहचान- दोनों पदों के बीच प्राय: योजक चिन्ह (Hyphen) (-) का प्रयोग होता है। इस समास में एक जैसे दो शब्द आएँगे जैसे:- संज्ञा – संज्ञा, क्रिया -क्रिया, विशेषण - विशेषण आदि।

द्वंद्व समास के तीन प्रकार हैं –

(1) इतरेतर द्वंद्व
(2) समाहार द्वंद्व
(3) वैकल्पिक द्वंद्व

1. **इतरेतर द्वंद्व** – इस समास का विग्रह –(और, तथा, एवं, व) योजक चिन्हों का प्रयोग ।

समस्त पद	-	**विग्रह**
नदी – नाले	-	नदी और नाले
पाप- पुण्य	-	पाप और पुण्य
सुख - दुख	-	सुख और दुख
गुण-दोष	-	गुण और दोष
देश – विदेश	-	देश और विदेश
आगे – पीछे	-	आगे और पीछे
राजा - प्रजा	-	राजा और प्रजा
नर - नारी	-	नर और नारी
राधा – कृष्ण	-	राधा और कृष्ण
छल – कपट	-	छल और कपट
अपना – पराया	-	अपना और पराया
गंगा- यमुना	-	गंगा और यमुना
कपड़ा –लत्ता	-	कपड़ा और लत्ता
वेद- पुराण	-	वेद और पुराण
गाड़ी – घोड़ा	-	गाड़ी और घोड़ा
खरा - खोटा	-	खरा और खोटा
गौरी – शंकर	-	गौरी और शंकर
अन्न-जल	-	अन्न और जल
ऊंच – नीच	-	ऊंच और नीच
माता – पिता	-	माता और पिता
यश – अपयश	-	यश और अपयश
ठण्डा – गरम	-	ठंडा और गरम
हिन्दु – मुसलमान	-	हिन्दु और मुसलमान
भला – बुरा	-	भला या बुरा
तेरी - मेरी	-	तेरी और मेरी
दो - चार	-	दो या चार
इधर – उधर	-	इधर और उधर
ऊपर – नीचे	-	ऊपर या नीचे
उठता – गिरता	-	उठता और गिरता
घर – द्वार	-	घर और द्वार
बन – ठन	-	बन और ठन
देश – विदेश	-	देश और विदेश
नाचना-गाना	-	नाचना और गाना
देवा-सुर	-	देव और असुर
दरवाजे – खिड़कियाँ	-	दरवाजे और खिड़कियाँ
धर्मा-धर्म	-	धर्म और अधर्म
ऋषियों – मुनियों	-	ऋषियों और मुनियों
राधा-कृष्ण	-	राधा और कृष्ण
लड़ाई – झगड़ा	-	लड़ई और झगड़ा
भाई – बहन	-	भाई और बहन
हीरा – मोती	-	हीरा और मोती
रात - दिन	-	रात और दिन
एक – दूसरे	-	एक या दूसरे
सीता – राम	-	सीता और राम
दोपहर –संध्या	-	दोपहर या संध्या
लव– कुश	-	लव और कुश
खली – भूसा	-	खली और भूसा
धनी - मानी	-	धनी और मानी
अच्छा – बुरा	-	अच्छा या बुरा
खट्टा – मीठा	-	खट्टा और मीठा
दाएँ -बाएँ	-	दाएँ या बाएँ
दाल – रोटी	-	दाल और रोटी
दानें – चारें	-	दानें और चारें
धूप – दीप	-	धूप और दीप
मार-पीट	-	मार और पीट
राधे – श्याम	-	राधे और श्याम
उछलने – कूदने	-	उछलने और कूदने
नर – नारी	-	नर और नारी
आरजू – विनती	-	आरजू या विनती
लोटा – डोरी	-	लोटा और डोरी
मरना – जीना	-	मरना और जीना
आटा – दाल	-	आटा लौर दाल
गिरते – पड़ते	-	गिरते और पड़ते
ऊँच – नीच	-	ऊंच और नीच
आज - कल	-	आज या कल
हानि – लाभ	-	हानि और लाभ
सोडा – नमक	-	सोडा और नामक
छोटा – बड़ा	-	छोटा और बड़ा
जान – पहचान	-	जान और पहचान
राम-लक्ष्मण	-	राम और लक्ष्मण
सोलह – सत्रह	-	सोलह या सत्रह
दाल – भात	-	दाल और भात

समस्त पद	गौण पद+गौण पद	विग्रह(सामान्य अर्थ)	सामान्य पद (इंगित अर्थ)
नीलकंठ	नील + कंठ	नीला कंठ है जिसका	शिवजी, एक पक्षी
गजानन	गज + आनन (मुख)	गज के समान है आनन जिसका	श्री गणेश जी
गिरिधर	गिरि + धर	गिरि की धारण करने वाला	श्री कृष्ण
चतुरानन	चतुर + आनन (मुख)	चार मुख वाला	ब्रह्मा जी
चक्रधर	चक्र + धर	जिसके हाथ मे चक्र हो	श्री कृष्ण
घनश्याम	घन + श्याम	काले बादल जैसा	श्री कृष्ण
त्रिलोचन	त्रि + लोचन	तीन आँखों वाला	शिवजी
दशानन	दश + आनन (मुख)	दस है आनन जिसके	रावण
महावीर	महा + वीर	महान है वीर जो	हनुमान
मयूरवाहन	मयूर + वाहन	मयूर की सवारी है जिसकी	कार्तिकेय
चतुर्भुज	चतुर + भुज	चार है भुजाएं जिसकी	विष्णु

कर्मधारय समास तथा बहुव्रीहि समास में अन्तरः-

इन दोनों समासों में अन्तर समझने के लिए इनके विग्रह पर ध्यान देना चाहिए।

⇒ कर्मधारय समास में एक पद (कोई एक पद ना कि पहला/दूसरा) विशेषण या उपमान होता है और दूसरा (कोई दूसरा पद) पद विशेष्य या उपमेय होता है।

जैसेः-

(i) नीलगगन अर्थात् नीला गगन (आकाश)/नीला हैजो आकाश

व्याख्याः नीलगगन में एक पद नील अर्थात् नीला विशेषण है जबकि दूसरा पद गगन विशेष्य है।

(ii) चरण कमल अर्थात् कमल के समान चरण है जो

व्याख्याः चरण कमल मे एक पद चरण उपमेय (जिसकी तुलना की जाती है) है जबकि, दूसरा पद कमल उपमान (जिससे तुलना की जाती है) है।

⇒ बहुव्रीहि समास में समस्त पद किसी संज्ञा के विशेषण का कार्य करता है।

जैसे :- चक्रधर - चक्र को धारण करता है जो अर्थात् श्री कृष्ण

व्याख्या :- यहाँ पर समस्त पद अर्थात चक्रधर श्रीकृष्ण (संज्ञा) की विशेषता बता रहा है कि वह चक्र को धारण किए हुए है।

द्विगु समास तथा बहुव्रीहि समास के अन्तर :-

उन दोनों समासों में अन्तर समझने के लिए भी इनके विग्रह पर ध्यान देना चाहिए।

बहुव्रीहि समास में समस्त पद किसी संज्ञा के विशेषण का कार्य करता है जबकि द्विगु समास का पहला पद हमेशा संख्यावाचक विशेषण होता है।

जैसेः-

(I) दशानन - दस आनन (मुख) है जिसके अर्थात् रावण – बहुब्रीहि समास

दशानन - दस आननों (मुखों) का समूह - द्विगु समास

(II) चतुर्भुज - चार है भुजाएँ जिसकी अर्थात् विष्णु - बहुव्रीहि समास

चतुर्भुज- चार भुजाओं का समूह - द्विगु समास

नोटः एक ही सामासिक (समस्त) पद दो या दो से अधिक समासों का उदाहरण हो सकता है। इसकी रूपरेखा समास के विग्रह से स्पष्ट होती है।

उदाहरणः-

नीलकंठ - नीला है कंठ जो (कर्मधारय) नीला कंठ है जिसका - शिवजी (बहुव्रीहि)

घनश्याम - घन के समान श्याम (कर्मधारय)

घन के समान श्याम है जो - कृष्ण (बहुव्रीहि)

चन्द्रमुख - चन्द्र के समान मुख (कर्मधारय)

चन्द्र के समान है मुख जिसका - कार्तिकेय (बहुव्रीहि)

दशानन - दस आनन (मुख) (द्विगु) दस मुख है जिसके अर्थात् रावण (बहुव्रीहि)

षडानन - छः आनन (मुख) (द्विगु) छः मुख है जिसके अर्थात् कार्तिकेय(बहुव्रीहि)

लंबोदर - लम्बा है जो उदर (कर्मधारय) लंबा है उदर (पेट)जिसका-गणेश (बहुव्रीहि)

अध्याय – 17

मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

मुहावरा :- मुहावरा बात कहने की एक शैली है। यह अरबी भाषा के 'मुहावर' शब्द से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है- अभ्यास करना या बातचीत "लक्षणा व व्यंजना द्वारा वह शुद्ध वाक्य जो किसी बोली जाने वाली भाषा में प्रचलित होकर रुढ़ हो गया हो तथा प्रत्यक्ष अर्थ के बजाए सांकेतिक अर्थ देता हो ।"

"मुहावरा" कहलाता है, जैसे खिचड़ी पकाना, लाठी खाना, नाम धरना आदि ।

लोकोक्तियाँ / कहावतें

लोकोक्ति का अर्थ है 'लोक समाज में कही जाने वाली उक्तियाँ' तथा कहावत का अर्थ है 'कही जाने वाली बात।'

ऐसा वाक्य जो चमत्कृत ढंग से संक्षेप में, किसी सत्य या नीति का आशय, सशक्त रूप से व्यक्त करे तथा अधिक समय तक प्रयोग में आकर जनजीवन में प्रचलित हो गया हो लोकोक्ति/ कहावत कहलाती है।

लोकोक्तियों / कहावतों की निम्न विशेषताए होती हैं :

1. लोकोक्तियाँ / कहावतें प्रत्यक्ष अर्थ नहीं बल्कि सांकेतिक अर्थ देते हैं।
2. लोकोक्तियाँ / कहावतों में जीवन के गहरे तथा मूल्यावान अनुभव छिपे रहते हैं, इसलिये इन्हें ज्ञान की पितरियाँ कहा जाता हैं।
3. लोकोक्तियाँ / कहावतें एक व्यक्ति से सम्बन्धित न होकर 'जन साधारण की धरोहरें' होती हैं ।

अपना उल्लू सीधा करना	=	स्वार्थ सिद्ध करना
अपनी खिचड़ी अलग पकाना	=	सबसे अलग रहना
अपने मुँह मिया मिट्ठू बनना	=	अपनी प्रशंसा स्वयं करना
अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना	=	स्वयं को हाँनि पहुँचाना
अपने पैरों पर खड़े होना	=	आत्मनिर्भर होना
अक्ल पर पत्थर पड़ना	=	बुद्धि भ्रष्ट होना
अक्ल के पीछे लट्ठ लेकर फिरना	=	मूर्खता प्रदर्शित करना
अंगूठा दिखाना	=	कोई वस्तु देने या काम करने से इंकार करना
अँधे की लकड़ी होना	=	एक मात्र सहारा
अच्छे दिन आना	=	भाग्य खुलना
अंग-अंग फूले न समाना	=	बहुत खुशी होना
अंगारों पर पैर रखना	=	साहसपूर्ण खतरे में उतरना
आँख का तारा होना	=	बहुत प्यारा
आँखें बिछाना	=	अत्यन्त प्रेम पूर्वक स्वागत करना
आँखें खुलना	=	वास्तविकता का बोध होना
आँखों से गिरना	=	आदर कम होना
आँखों में धूल झोंकना	=	धोखा देना
आँख दिखाना	=	क्रोध करना/डराना
आटे दाल का भाव मालूम होना	=	बड़ी कठिनाई में पड़ना
आग बबूला होना	=	बहुत गुस्सा होना
आग से खेलना	=	जानबूझ कर मुसीबत मोल-लेना
आग में घी डालना	=	क्रोध भड़काना
आँच न आने देना	=	हानि या कष्ट न होने देना
आड़े हाथों लेना	=	खरी-खरी सुनाना
आनाकानी करना	=	टालमटोल करना
आँचल पसारना	=	याचना करना
आस्तीन का साँप होना	=	कपटी मित्र
आकाश के तारे तोड़ना	=	असंभव कार्य करना
आसमान से बातें करना	=	बहुत ऊँचा होना
आकाश सिर पर उठाना	=	बहुत शोर करना
आकाश पाताल एक करना	=	कठिन प्रयत्न करना
आँख का काँटा होना	=	बुरा लगना
आँसू पीकर रह जाना	=	भीतर ही भीतर दुखी होना
आठ-आठ आँसू गिराना	=	पश्चाताप करना
इधर-उधर की हाँकना	=	बेमतलब की बातें करना
इतिश्री होना	=	समाप्त होना

पट्टी पढ़ाना	=	बहका देना, उल्टी राय देना
पेट काटना	=	बहुत कंजूसी करना
पानीदार होना	=	इज्जतदार होना
पाँवों में बेड़ी पड़ जाना	=	बंधन में बंध जाना
बाँह पकड़ना	=	सहायता करना/सहारा देना
बीड़ा उठाना	=	कठिन कार्य करने का उत्तरदायित्व लेना
बाल की खाल निकालना	=	नुक्ताचीनी करना
बात बनाना	=	बहाना करना
बाँसों उछलना	=	अत्यधिक प्रसन्न होना
बाल बाँका न होना	=	कुछ भी नुकसान न होना
बाज न आना	=	आदत न छोड़ना
बगलें झाँकना	=	इधर-उधर देखना/निरुत्तर होना/जवाब न दे सकना।
बायें हाथ का खेल होना	=	सरल कार्य
बल्लियों उछलना	=	अत्यधिक प्रसन्न होना
बछिया का ताऊ होना	=	महामूर्ख
भौंह चढ़ाना	=	क्रुद्ध होना
भूत सवार होना	=	हठ पकड़ना / काम करने की धुन लगना
भीगी बिल्ली बनना	=	डरपोक होना
भाड़ झोंकना	=	तुच्छ कार्य करना/व्यर्थ समय गुजारना
भरी थाली को लात मारना	=	जीविकोपार्जन के साधन ठुकरा देना
भैंस के आगे बीन बजाना	=	मूर्ख के समक्ष बुद्धिमानी की बातें करना व्यर्थ
बाल-बाल बचना	=	कुछ भी हानि न होना
बाछे खिल जाना	=	आश्चर्य जनक हर्ष
मन खट्टा होना	=	मन फिर जाना/जी उचाट होना
मन के लड्डू खाना	=	कोरी कल्पनाएँ करना
मुँह में पानी भर आना	=	इच्छा होना/जी ललचाना
मुँह में लगाम न लगाना	=	अनियंत्रित बातें करना
मुट्ठी गर्म करना	=	रिश्वत देना, लेना
मुँह की खाना	=	हार जाना/हार मानना
मक्खियाँ मारना	=	बेकार भटकना/बैठना
मक्खीचूस होना	=	बहुत कंजूस होना
मुँह पर हवाइयाँ उड़ना	=	चेहरा फक पड़ जाना
मन मसोस कर रह जाना	=	इच्छा को रोकना
मुँह काला करना	=	कलंकित होना
मुँह की खाना	=	बातों में हारना/अपमानित होना
मुँह तोड़ जवाब देना	=	कठोर शब्दों में कहना
मन मारना	=	उदास होना/इच्छाओं पर नियंत्रण

लोकोक्तियाँ एवं कहावतें

अपना रख, पराया चख	-	अपना बचाकर दूसरों का माल हड़प करना
अपनी करनी पार उतरनी	-	स्वयं का परिश्रम ही काम आता है।
अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता	-	अकेला व्यक्ति शक्ति हीन होता है।
अधजल गगरी छलकत जाए	-	ओछा आदमी अधिक इतराता है।
अंधों में काना राजा	-	मूर्खों में कम ज्ञान वाला भी आदर पाता है।
अंधे के हाथ बटेर लगना	-	अयोग्य व्यक्ति को बिना परिश्रम संयोग से अच्छी वस्तु मिलना
अंधा पीसे कुत्ता खाय	-	मूर्खों की मेहनत का लाभ अन्य उठाते हैं असावधानी से अयोग्य को लाभ
अब पछताये होत क्या, जब चिड़िया	-	अवसर निकल जाने पर पछताने से कोई लाभ चुग गई खेत नहीं
अन्धे के आगे रोवें अपने नैना खावें	-	निर्दय व्यक्ति या अयोग्य व्यक्ति से सहानुभूति की पेक्षा करना व्यर्थ है
अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है	-	अपने क्षेत्र में कमजोर भी बलवान बन जाता है।
अन्धेर नगरी चौपट राजा	-	शासन की अयोग्यता से सर्वत्र अराजकता आ ना।

'प' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- गाँव की वह सभा जिसमें पंच लोग झगड़ों का निपटारा करते हैं - पंचायत
- जो पढ़ने में रोचक लगे - पठनीय
- जिसका या जिसके साथ परिचय हो चुका हो - परिचित
- (स्त्री) जिसे मालिक ने छोड़ दिया हो - परित्यक्ता
- पूर्ण रूप से पका या पचा हुआ - परिपक्व
- परपुरुष से प्रेम करने वाली - परकीया
- अगुआ बनकर मार्ग दिखाने वाला - पथ-प्रदर्शक
- जो निगाह से परे हो - परोक्ष
- दूसरों का उपकार करने वाला - परोपकारी
- दूसरों को उपदेश देने वाला - परोपदेशक
- जो पदों अर्थात् काव्य के रूप में हो - पद्य
- जो किसी दूसरे के आश्रय में रहता हो - पराश्रित
- परलोक से संबंधित - पारलौकिक
- किए हुए परिश्रम के बदले में मिलने वाला धन - पारिश्रमिक

'फ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- जुआ खेलने का स्थान - फड़
- फल को इस प्रकार रखना कि गलने सड़ने न पाये - फल-परिरक्षण
- केवल फल खाकर रहने वाला - फलाहारी
- व्यर्थ में किया गया व्यय - फिजूलखर्ची/अपव्यय
- छत में टाँगने का शीशे का कमल या गिलास, जिसमें मोमबत्तियाँ जलती हों - फानूस
- फलने वाला या फल (ठीक परिणाम) देने वाला - फलदायी
- घूमफिरकर सौदा बेचने वाला - फेरीवाला
- जिस कागज पर मानचित्र, विवरण या कोष्ठक अंकित हो- फलक
- वह पात्र जिसमें शोभा के लिए फूल लगाकर रखे जाते है- फूलदान

'ब' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- जिसे समाज या जाति से बाहर निकाल दिया गया हो - बहिष्कृत
- जिसने अनेक विषयों का ज्ञान सुना और स्मरण रख लिया हो - बहुश्रुत
- बुद्धि द्वारा ग्रहण किये जाने योग्य - बुद्धिग्राह्य
- जिसकी जीविका बुद्धि के काम से चलती हो - बुद्धिजीवी
- बहुत-सी भाषाओं को जानने वाला - बहुभाषाविद्
- बहुत-सी भाषाओं को बोलने वाला - बहुभाषाभाषी
- जो बहुत से विषयों का जानकार हो - बहुज्ञ
- यह सिद्धान्त कि देवता वहुत से हैं जिनकी उपासना ही जानी चाहिए - बहुदेववाद
- अनेक धंधों से संबंध रखने वाला - बहुधंधी
- आधे से अधिक लोगों की मिलकर एक राय - बहुमत
- जिसके जोड़ का कोई न हो - बेजोड़
- जिसका कोई रोजगार नहीं है - बेरोजगार
- सूर्योदय से पहले दो घड़ी तक का पवित्र समय - ब्रह्ममुहूर्त्त
- पानी में लगने वाली आग (समुद्र की आग) - बड़वाग्नि/बड़वानल
- खाने की इच्छा - बुभुक्षा
- जिसको किसी बात की खबर न हो - बेखबर
- वह स्थान जहाँ पर बैठकर माल खरीदा और बेचा जाता है- बाजार/हाट

'भ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- जिसका भजन करना उचित और आवश्यक है - भजनीय
- जो भय से घबराया हुआ हो - भयाकुल
- जो भविष्य में निश्चित रूप से होने को है - भवितव्य
- जो अनेक भाषाओं का ज्ञाता हो - भाषाविद्
- भूतों का ईश्वर - भूतेश
- जिसका हृदय भग्न हो - भग्नहृदय
- भविष्य में होने वाला - भावी
- भूगोल से संबंधित या भूगोल का - भौगोलिक
- दीवार पर बने हुए चित्र - भित्तिचित्र
- किसी टूट-फूटी इमारत या बस्ती का बचा हुआ अंश - भग्नावशेष
- भूगर्भ विज्ञान का जानकार - भूगर्भवेत्ता
- जो पहले रहा हो (किसी पद पर) - भूतपूर्व
- जिसका भोग करना उचित हो - भोग्य
- भारत देश से संबंधित या भारत में उत्पन्न – भारतीय

'म' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- चुनाव में अपने मत देने की क्रिया - मतदान
- मन के दुर्बल होने की स्थिति या भाव - मनोदौर्बल्य
- मन के मलिन होने की स्थिति या भाव - मनोमालिन्य
- मन और उसकी अवस्थाओं तथा क्रियाओं का अध्ययन करने वाला शास्त्र - मनोविज्ञान
- दो विरोधी मार्गों के बीच का मार्ग - मध्यमार्ग
- समाज में उच्चवर्ग और निम्नवर्ग के बीच का वर्ग - मध्यवर्ग
- किसी विषय में एक का दूसरे या दूसरों से मत न मिलना- मतभेद
- मतिमंद होने की अवस्था - मतिमांद्य
- जो मद्यपान करने का आदी हो - मद्यप
- मन को मोह लेने वाला – मनमोहक
- किसी बात के मर्म (गूढ़ रहस्य) को जानने वाला - मर्मज्ञ
- जिसके हृदय को चोट पहुँची हो – मर्माहत

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - ⬇ (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk8S6W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
	Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.-Biramganj, Dis.-Raisen, MP
N.A.	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A.	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

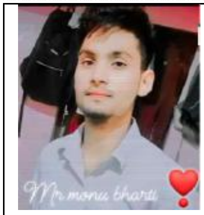	**MONU S/O KAMTA PRASAD**	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A.	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A.	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A.	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A.	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A.	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
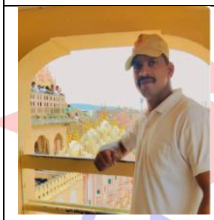	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A.	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A.	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others……

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/jl972n

Online order करें – http://surl.li/pcohy

Call करें - 9887809083